अर्हम्

साउथ कलकत्ता तेरापंथी सभा

कोलकाता
30 अगस्त 2011

साउथ कलकत्ता तेरापंथ भवन में पर्युषण का अद्भुत रंग

पापशुद्धि की प्रक्रिया - प्रतिक्रमण

- साध्वीश्री कनकश्रीजी

श्रमण संस्कृति के समर्थ संवाहक आचार्यश्री महाश्रमण जी की प्रबुद्ध शिष्या साध्वीश्री कनकश्रीजी के सान्निध्य में साउथ कलकत्ता तेरापंथी सभा द्वारा तेरापंथ भवन में आयोजित पर्युषण महापर्व आध्यात्मिक अनुराग, श्रद्धा व भक्ति का अद्भुत रंग बिखेर रहा है। भवन के पांचों तल विभिन्न धार्मिक प्रवृतियों के केन्द्र बने हुए है। अर्हं आरोग्य केन्द्र में सैकड़ों लोग स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं तो प्रेक्षा ध्यान योग केन्द्र में मानसिक शान्ति और भावशुद्धि के प्रयोग चल रहे हैं। उपासना कक्ष में चौबीस घंटे सैंकड़ों श्रद्धालु नमस्कार महामंत्र के जाप से मंगलमय वातावरण का निर्माण कर रहे हैं तो, चौथे तल में साध्वीश्री के आगम शास्त्र पर आधारित प्रभावशाली प्रवचनों का श्रवण कर हजारों श्रद्धालु अद्भुत आध्यात्मिक अमृत का पान कर रहे हैं। रात्री में आयोजित होने वाली ज्ञान वर्धक प्रतियोगिताओं का तो समा ही अलग होता है। आबाल वृद्ध युवा - सभी पर्युषण - आराधना में अपूर्व आनंद की अनुभूति कर रहें है।

मंगलवार को पर्युषण प्रवचन माला के अंतर्गत ''अणुव्रत चेतना'' को जगाने की प्रेरणा देते हुए साध्वीश्री कनकश्रीजी ने कहा - व्रत व्यक्ति का सुरक्षा कवच है। वह आत्मा को विभाव से बचाता है और स्वभाव में प्रतिष्ठित करता है। इसके लिए जरूरी है - अहं भाव, स्वार्थ भाव और देह भाव से ऊपर उठें। एकान्त अंधकार और अनुकूलता - प्राणी को पाप में प्रवृत्त करने के निमित्त हैं। इनसे बचें। जीवन में जाने अनजाने यदि कोई पाप हो जाता है तो उसे छिपायें नहीं, गुरु के सामने शुद्ध अंत:करण से अपनी भूल स्वीकार करें और उसका प्रायश्चित्त करें। इससे व्यक्ति पाप शुद्ध हो जाता है। साध्वीश्री ने प्रतिक्रमण की महत्ता बताते हुए कहा - हमारी चेतना जब - जब विभाव, विषय, कषाय से प्रभावित होती है, आत्मा का पतन होता है। उन विकारों से चेतना को वापस मोडकर अन्तर्मुखी बनाने की विधि है प्रतिक्रमण। यह ग्रंथि मोचन की आध्यात्मिक पद्धति है।

साध्वीश्री मधुलताजी ने जीवन में व्रतों की उपयोगिता बाताते हुए कहा - व्रत - व्यक्ति को बुराई से बचाता है। कर्म बंधन को रोकता है। बंधन मुक्ति ही अध्यात्म साधना का प्रथम उद्देश्य है। व्रत सें प्रतिरोधक शक्ति होती है। इससे व्यक्तित्व भी शक्तिशाली बनता है। साध्वीश्री ने अणुव्रत को प्रायोगिक धर्म बताते हुए कहा - यह चरित्र शुद्धि और मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा करने वाला जीवंत धर्म है। दक्षिण हाबड़ा तेरापंथ महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रस्तुत मंगल संगान से कार्यक्रम शुरू हुआ।

साउथ सभा भवन के प्रधान न्यासी श्री भीखम चंद पुगलिया ने साध्वीश्री से दसवां उपवास व्रत स्वीकार किया। मोतीलालजी छाजेड व सुश्री अंकिता बैद ने सातवां उपवास व्रत स्वीकार किया। चातुर्मास व्यवस्था के संयोजक भंवरलालजी बैद ने तपस्वियों का सम्मान किया व आवश्यक सूचनाएं दी।